श्री सूर्य देव स्तुति – हिंदी काव्य

(हिंदी भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

आधार

ब्रह्म-पुराण अध्याय २८

श्री राम कथा संस्थान, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

श्री सूर्य देव स्तुति – हिंदी काव्य

(हिंदी भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

आधार

ब्रह्म-पुराण अध्याय २८

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान

३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

वेबसाइट: https://shriramkatha.org

ईमेल: srkperth@outlook.com

टेलीफोन: +६१ (०८) ९४०१ १५४३

अनुक्रमणिका

समर्पण 4

निवेदन 5

श्री सूर्य देव स्तुति 6

सूर्यदेव की आरती 24

श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य 25

कवि - डॉ यतेंद्र शर्मा 26

समर्पण

भगवान् श्री राम - सूर्यदेव के उपासक

हे उपासक आदित्य हरि श्री राम करें हम वंदन |
पाए विजय रण रावण किए जब रविदेव अर्चन || (१)

महर्षि अगस्त्य संग किए आप आदित्य स्तोत्र पठन |
दिए ज्ञान हों दूर सभी कष्ट करे जो रवि का पूजन || (२)

करो उद्धार हमारा आए प्रभु हम आपकी शरन |
त्राहि त्राहि त्राहि पुकारें हम दीन दुःखी जन || (३)

निवेदन

शास्त्रों में सूर्यदेव को मान-सम्मान, ऊर्जा, उच्च पद, प्रभावशाली, आत्मा-कारक एवं चिकित्सा का स्वामी माना गया है। समस्त चराचर जगत की आत्मा सूर्यदेव ही हैं। सूर्य से ही इस पृथ्वी पर जीवन है। वैदिक काल से ही आर्य सूर्य को विश्व का कर्ता-धर्ता मानते रहे हैं। सूर्य का शब्दार्थ है, सर्व प्रेरक। यह सर्व प्रकाशक, सर्व प्रवर्तक होने से सर्व कल्याणकारी है। ऋग्वेद में सूर्यदेव को सर्वश्रेष्ठ देव कहा गया है। यजुर्वेद में 'चक्षो सूर्यो जायत' कह कर सूर्य को भगवान का नेत्र माना गया है। छान्दोग्यपनिषद में सूर्य को प्रणव निरूपित कर उनकी ध्यान साधना से पुत्र प्राप्ति एवं रोगीओं के व्याधि हरण करने का कारक बताया गया है। ब्रह्मवैर्वत पुराण में सूर्य को परमात्मा स्वरूप माना गया है। प्रसिद्ध गायत्री मंत्र सूर्य परक ही है। सूर्योपनिषद में सूर्य को ही संपूर्ण जगत की उत्पत्ति एवं पालन का एक मात्र कारण निरूपित किया गया है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य को नवग्रहों में प्रथम ग्रह और पिता के भाव कर्म का स्वामी माना गया है। जीवन से जुड़े तमाम दुखों और रोग आदि को दूर करने के साथ साथ जिन्हें संतान नहीं होती, उन्हें सूर्य साधना से तुरंत यथोचित लाभ की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मपुराण के २८वें अध्याय में स्वयं ब्रह्मदेव ने सूर्यदेव का महात्मय समझाया है। हम यहां ब्रह्मपुराण के २८वें अध्याय का हिंदी काव्यानुवाद कर लोक हित में इस पुस्तिका को प्रकाशित करते हैं।

मकर संक्रांति के दिवस सूर्यदेव अपने पुत्र शनिदेव के गृह मकर राशि में प्रवेश करते हैं। यह पिता-पुत्र का मिलन अत्यंत मंगलकारी है। शास्त्रों में ऐसी मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिवस सूर्य उपासना से अत्यंत लाभ होता है।

आपका अपना, प्रभु की सेवा में रत,

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान
पर्थ, ऑस्ट्रेलिया - ६०२५

श्री सूर्य देव स्तुति

गए शरण चतुरानन एक बार ब्रह्मलोक में ब्राह्मन |
है कौन सर्वश्रेष्ठ देव त्रिलोक में बतलाओ भगवन || (१)

भावार्थ: एक बार ब्राह्मण ब्रह्मलोक में ब्रह्मा जी की शरण गए और उनसे पूछा, 'हे भगवन, हमें बताएं कि त्रिलोक में सर्वश्रेष्ठ देवता कौन है?'

गृहस्थ साधु और योगी करें सभी जिन का पूजन |
हो मन अनुभव दिव्य करें सुभग जब उनका सुमरन ||(२)

भावार्थ: सभी साधु, योगी एवं गृहस्थ जिनका पूजन करते हैं| जब सौभाग्यशाली उनका स्मरण करते हैं तो मन में दिव्यता का अनुभव होता है|

हैं कौन देव जो दायक प्राण पितर करें वास दिवन् |
है न सम जिनके कोई करें आदि काल विश्व सृजन || (३)

भावार्थ: स्वर्गलोक में वास करने वाले ऐसे कौन से देवता हैं जो हमारे पूर्वजों के प्राण दायक हैं| जिनके समान कोई नहीं है और काल के प्रारम्भ में जो विश्व का सृजन करते हैं |

दें आश्रय भू काल प्रलय जब हो विश्व छिन्न भिन्न |
हो तुम्हीं समर्थ भगवन जो बता सकें यह भेद गहन || (४)

भावार्थ: जो प्रलय काल में विश्व के छिन्न भिन्न होने पर पृथ्वी के आश्रय दाता हैं| हे भगवन, आप ही इस गूढ़ रहस्य को बताने में समर्थ हैं|

बोले तब ब्रह्मदेव सुनो ब्राह्मणगण यह सुवचन |
हैं सूर्य सर्वश्रेष्ठ देव जो करें दूर तम हिय जन || (५)

भावार्थ: (ब्राह्मणों का यह प्रश्न सुनकर) तब ब्रह्मदेव बोले, 'हे ब्राह्मणगण, यह मेरे सुवचन सुनो| सूर्यदेव सबसे श्रेष्ठ देव हैं जो प्राणियों के अन्धकार को दूर कर देते हैं (तमसो मा ज्योतिर्गमय - अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर देते हैं)|'

हैं सूर्यदेव अनादि समझो इन्हें तुम सत सनातन |
हैं समर्थ इनकी तीक्ष्ण किरण करें जो तप्त भुवन || (६)

भावार्थ: सूर्यदेव अनादि हैं| इन्हें सत्य एवं सनातन समझो| इनकी अग्निमय किरणें पृथ्वी को झुलसाने की शक्ति रखती हैं (अर्थात दुष्टों का विनाश करने की शक्ति रखती हैं)|

हैं मेरे सहायक जब करूँ मैं ब्रह्माण्ड का सृजन |
हैं हेतु जन्म भूजन नहीं होता कभी इनका पतन || (७)

भावार्थ: यह ब्रह्माण्ड के सृजन में मेरे सहायक हैं| यह प्राणीओं के जन्म के हेतु हैं| इनका कभी पतन नहीं होता|

हैं जनयित्र सभी पितर करें सब देव उपसर्जन |
है दृढ़ आसन उनका करें दूर भ्रान्ति वह भूजन || (८)

भावार्थ: वह सभी पूर्वजों के जनक हैं|सभी देवताओं का वह प्रतिनिधित्व करते हैं| उनका आसान दृढ़ है| वह प्राणियों की व्याकुलता को नष्ट करते हैं|

हैं विश्व विकास के साधन हो जब संसार का सृजन |
हों विलीन काल प्रलय जन उनमें हो जब विघटन || (९)

भावार्थ: जब विश्व का सृजन होता है तो वह ही विकास के साधन बनते हैं (प्राणीओं को जीवन दान प्रदान करते हैं)| जब प्रलय काल में नाश होता है तो प्राणी उनमें विलीन हो जाते हैं|

होते परिवर्तित वायु रूप त्यागें जब योगी तन |
पाते वह सूर्य धाम जो रुप दीप्ति पश्चात मरन || (१०)

भावार्थ: जब योगी अपने तन का (समाधि द्वारा) त्याग करते हैं तब वह वायु रूप में परिवर्तित होते हैं| वह मरण पश्चात दीप्ति के भण्डार सूर्यधाम की प्राप्ति करते हैं|

पाएं खग शीतलता जब करें पर्ण मध्य वृक्ष लयन |
पाएं तैसे शांति संत जब लें किरण सूर्य शरन || (११)

भावार्थ: जिस प्रकार पक्षी वृक्ष के मध्य में पत्तों पर विश्राम करने से शीतलता पाते हैं, उसी प्रकार जब संतगण रवि किरणों की शरण लेते हैं, तब शान्ति को प्राप्त करते हैं|

हैं जैसे युक्त योग शक्ति और गुण जनक सम राजन |
वालखिल्य ज्ञानी योगी जो हेतु तपस्या विचरें वन || (१२)

भावार्थ: जिस प्रकार जनक समान सम्राट योग, शक्तियों एवं (समस्त) गुणों से युक्त हैं, एवं तपस्या हेतु वन में विचरण करने वाले वालखिल्य (समस्त ऋग्वेद की ११ ऋचाएं ज्ञान प्राप्त योगी) ज्ञानी हैं|

समान महर्षि वेद व्यास ऋषिगण दिए जो ब्रह्म वेदन |
पाए योग शक्ति किए प्रवेश जब सूर्य परिकर्षन || (१३)

भावार्थ: ब्रह्म ज्ञान देने वाले महर्षि वेद व्यास समान ऋषिगण ने योग शक्ति सूर्य चक्र में प्रवेश करने पर प्राप्त की (अर्थात सूर्य देव को अपना गुरु स्वीकार करें पर प्राप्त की)|

यशस्वी व्यास सुत सुकदेव जो अति प्रिय कृष्ण भगवन |
किए प्राप्त ज्ञान सनातन बने जब शिष्य प्रतिदिवन् || (१४)

भावार्थ: (महर्षि वेद) व्यास के यशस्वी सुपुत्र (महर्षि) सुकदेव, जो भगवान् कृष्ण के अति प्रिय हैं, इनको भी सनातन (ब्रह्म) ज्ञान प्राप्ति सूर्य के शिष्य बनकर प्राप्त हुई|

है वर्णित वेद दें समृद्धि ब्रह्मा विष्णु और जतिन |
होता यह संभव तभी जब करते रवि तम उन्मूलन || (१५)

भावार्थ: वेदों में वर्णित है कि (त्रिदेव) ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश समृद्धि देते हैं| यह तभी संभव होता है जब सूर्य देव अंधकार (अज्ञान) का उन्मूलन करते हैं (अर्थात प्राणियों में विवेक जगाते हैं)|

वर्णित यही वेद पुराण करो केवल सूर्यदेव भजन |
देते रवि फल शुभ कर्म होते जो अनंत रोमहर्षन || (१६)

भावार्थ: वेद पुराणों में यही वर्णित है कि सूर्यदेव की स्तुति करो | यही शुभ कर्मों के फल देते हैं जिनसे अनंत आनंद की प्राप्ति होती है|

हैं रवि अधिपति सब जन अतैव करो इनका पूजन |
हैं यह प्रमत विश्व गुरु दिए ज्ञान हनुमान भगवन || (१७)

भावार्थ: रवि ही सभी प्राणियों के स्वामी हैं, अतः इनका पूजन करो| यह महाज्ञानी विश्व गुरु हैं जिन्होंने भगवन हनुमान जी को ज्ञान दिया|

नहीं जाने कोई आदि अंत हैं यह स्वामी भुवन |
है ओजित भू हेतु करे धारण हार रवि तुम्र किरन || (१८)

भावार्थ: इनके आदि एवं अनंत का किसी को भी ज्ञान नहीं हैं| यही पृथ्वी के ईश्वर हैं| रवि की तेजोवत किरणों की माला धारण करने के कारण पृथ्वी ओजमय है|

आसीन दृढ़ सदैव हैं हेतु सृजन चतुर्दश भुवन |
दायक प्राण समग्र जीव रहते सिंधु भू या जलबंधन || (१९)

भावार्थ: इनका आसन सदैव स्थिर रहता है|यह १४ भुवनों के सृजन के कारण हैं (अर्थात इन्हीं के प्रभाव से ब्रह्मदेव १४ भुवनों का सृजन करते हैं)| समुद्र, पृथ्वी या जलासय में रहने वाले समस्त प्राणियों के यह जीवन दाता हैं|

हैं हम ऋणी रवि चूँकि वही हेतु विश्व सृजन |
करें वास तीर नद चन्द्रसरित हेतु कल्याण जन || (२०)

भावार्थ: हम रवि के ऋणी हैं क्योंकि उन्हीं के कारण विश्व का सृजन होता है| जन कल्याण के लिए वह चन्द्रसरित नदी के तीर पर वास करते हैं|

हैं सूर्य अशस्त एवं हेतु प्रजापति दक्ष विजनन |
हैं विभाजित द्वादश भाग हेतु सुलभ कल्याण जन || (२१)

भावार्थ: सूर्य अनभिव्यक्त हैं| यही प्रजापति दक्ष के जन्म के कारण हैं| जन कल्याण सुविधा हेतु इन्हें १२ भागों में विभाजित किया गया है|

आदित्य धातृ पर्जन्यन त्वष्ट्र पूसन भग आर्यमन |
विवस्वन विष्णु अंशुमन वरुण मित्र द्वादस वर्पन || (२२)

भावार्थ: आदित्य, धातृ, पर्जन्यन, त्वष्ट्र, पूसन, आर्यमन, भग, विवस्वन, विष्णु, अंशुमन, वरुण और मित्र, १२ रूप हैं|

हैं आदि आदित्य और यही सुरदेव इंद्रार्जुन |
करते स्वीकार हवि यज्ञ करें वध सब देव द्विषन् || (२३)

भावार्थ: सूर्य आदि (प्रथम) आदित्य हैं| यही देवताओं के देव इंद्रदेव हैं| यह यज्ञ हवि स्वीकार करते हैं और देवताओं के शत्रुओं का नाश करते हैं|

हैं धातृ द्वितीय रूप जो करें ईश्वर महिमामंडन |
वह सृजक पालक विश्व हैं रूप प्रजापति यशस्विन || (२४)

भावार्थ: धातृ दूसरे रूप हैं जो ईश्वर के प्रताप को जताने वाले यशस्वी प्रजापति रूप में विश्व का सृजन और पालन करते हैं|

जो स्थित सदा मध्य मेघ हैं वह रूप तृतीय पर्जन्यन |
करते वह वर्षा हेतु हल्य होता जिससे जग पालन || (२५)

भावार्थ: तृतीय रूप पर्जन्यन मेघों के मध्य में सदा निवास करते हैं| वह कृषि हेतु वर्षा करते हैं जिससे विश्व का पालन होता है|

चतुर्थ रूप है त्वष्ट्र करें जो वास सब विटपिन |
करें प्रदान औषधि और जनयित्र सब सुर भूजन || (२६)

भावार्थ: चतुर्थ रूप में त्वष्ट्र हैं जो सब वृक्षों में वास करते हैं| वह औषधि प्रदान करते हैं और सभी देव एवं प्राणियों के जनयित्र हैं|

जो रहते स्थित मध्य अन्न हैं वह पञ्चम रूप पूसन |
हैं यही हेतु सतत पोषण खग पशु सहित सब भूजन || (२७)

भावार्थ: पंचम रूप में पूसन हैं जो अन्न (खाद्य) के मध्य में वास करते हैं| यह समस्त पशु, पक्षी और प्राणियों का निरंतर पोषण करते हैं|

हैं षष्ठम रूप में भग करते जो त्रिलोक सरंक्षण |
स्वामी मान वैभव धन हैं ईश्वर सुर असुर भूजन || (२८)

भावार्थ: छठे रूप में भग हैं जो तीनों लोकों के सरंक्षक हैं| यह मान, वैभव एवं धन के स्वामी हैं और सुर, असुर, एवं प्राणियों के ईश्वर हैं|

करें जो निर्देश वायु वेग वह सप्तम रूप आर्यमन |
रहते मध्य सब सुर हैं दाता मोक्ष हमारे अभिजन || (२९)

भावार्थ: सप्तम रूप में आर्यमन हैं जो वायु के वेग को निर्देशित करते हैं| यह सभी देवताओं के मध्य में रहते हैं और हमारे पूर्वजों के मोक्ष दाता हैं|

दाता जन्म मनु रेवंत हैं वह अष्टम रूप विवस्वन |
हैं स्वामी ज्ञान गुह्य लिए माँ संक्षा गर्भ विजनन || (३०)

भावार्थ: अष्टम रूप में विवस्वन मनु रेवंत के जन्म दाता हैं| इन्होंने माता संक्षा (सूर्य देव की पत्नी) के गर्भ से जन्म लिया और यह रहस्य ज्ञान (परमात्म ज्ञान) के स्वामी हैं|

नवम रूप में विष्णु भगवन हैं जो देवों के रिपुमदन |
हैं पोषक सभी जीव वह ईश्वर सुर असुर भूजन || (३१)

भावार्थ: नवम रूप में यह (स्वयं) भगवान् विष्णु हैं जो देवों के शत्रुओं का नाश करते हैं| वह सभी जीवों के पोषक हैं और समस्त सुर, असुर एवं भू प्राणियों के स्वामी हैं|

दशम रूप में हैं अंशुमन जो करते नियन्त्रण पवन |
हैं वह युक्त प्रभावान किरण देते सभी दान जीवन || (३२)

भावार्थ: दशम रूप में अंशुमन हैं जो पवन को नियंत्रित करते हैं| यह प्रभावान किरणों से युक्त हैं और सभी को जीवन दान देते हैं|

करें वास जो मध्य जल हैं वह एकादस रूप वरुन |
वह रक्षक सभी प्रजाजन है मगरमच्छ उनका वाहन || (३३)

भावार्थ: ११वें रूप में वरुण हैं जो जल के मध्य में रहते हैं| वह समस्त प्राणियों के रक्षक हैं| इनका वाहन मगरमच्छ है|

वासी तट चन्द्रसरित हैं द्वादस रूप मित्र भगवन |
रहते लीन सदा साधन है भोजन उनका केवल पवन || (३४)

भावार्थ: द्वादस रूप में मित्र भगवान् चन्द्रसरित (नदी) के तट पर वास करते हैं| केवल पवन का भोजन करते हुए वह सदैव साधना में लीन रहते हैं|

सुनो सुनो सब ब्राह्मण बोले ब्रह्मदेव तब वचन |
हैं रवि अति पूजित देव जो स्थित द्वादस वर्पन || (३५)

भावार्थ: ब्रह्मदेव बोले, 'हे ब्राह्मणगण, सुनो, सुनो| सूर्यदेव इस प्रकार बारह रूपों में स्थित अति पूज्यनीय हैं|'

करे जो जन पूजन मनन इन द्वादस रूप रवि भगवन |
करे वह प्राप्त इहलोक अमन और मोक्ष परलोक मरन || (३६)

भावार्थ: इन के (सूर्यदेव के) द्वादस रूप का जो भी प्राणी पूजन, मनन करता है, उसे इहलोक में शांति और परलोक में मरण पर मोक्ष की प्राप्ति होती है|

कर बद्ध बोले ब्राह्मण करो हमारा संशय उन्मूलन |
यदि यही सत्य कि रवि मौलिक और शाश्वत भगवन || (३७)

भावार्थ: (ब्रह्मदेव के यह वचन सुनकर) सभी ब्राह्मण हाथ जोड़ कर तब (ब्रह्मदेव से) बोले, '(हे ब्रह्मदेव) हमारी एक शंका का समाधान करो| यदि यही सत्य है कि सूर्यदेव मौलिक एवं नित्य भगवन हैं|

कहाँ किए वह साधन जो पा सके परम शक्ति चेतन |
बोले ब्रह्मा तब वचन ब्राह्मण सुनो रहस्य अति गहन || (३८)

भावार्थ: उनका तप स्थान क्या था जिससे उन्हें अपनी परम शक्ति का आभास हुआ। तब ब्रह्मदेव बोले, 'हे ब्राह्मणगण, मैं अब तुम्हें एक अत्यंत गूढ़ रहस्य बताता हूँ।'

करते हुए सम्बोधन मित्र पूछे नारद सदृश प्रश्न |
बोले तब मित्र सुनो हे नारद मैं स्वयं और वरुन || (३९)

भावार्थ: भगवन मित्र को सम्बोधित करते हुए यही प्रश्न (ब्रह्मऋषि) नारद ने पूछा था। तब मित्र बोले, 'हे नारद सुनो। मैं स्वयं और वरुण देव।

भिन्न भिन्न स्थान किए हम काल एक साधना अति गहन |
था मेरा स्थान मित्रवन केवल किया भोजन पवन || (४०)

भावार्थ: हम ने भिन्न भिन्न स्थानों पर एक समय में गहन तपस्या की। मैंने (भगवन मित्र ने) केवल पवन का भोजन लेते हुए मित्रवन स्थान पर तप किया।

स्थान तट सिंधु अपर किया अति गहन तप देव वरुन |
की साधना अनेक वर्ष किए ग्रहण केवल जल भोजन || (४१)

भावार्थ: वरुण देव ने पश्चिमी सागर के तट पर केवल जल ग्रहण करते हुए सहस्त्रों वर्ष अति गहन तप किया।

ब्रह्मऋषि नारद फिर पूछे किए कौन ईश्वर पूजन |
की शान्ति कौन पितर दिए जो वरदान हो प्रसन्न || (४२)

भावार्थ: ब्रह्मऋषि नारद ने फिर (भगवन मित्र से) पूछा, '(आपने) कौन ईश्वर की स्तुति की? कौन पितरों की शान्ति की जिन्होंने प्रसन्न होकर आपको वर दिए।'

किए हम केंद्रित हरि विष्णु बोले मित्र तब यह वचन |
कृपा से उनकी हुए हम अविकारी स्थिर रहित पतन || (४३)

भावार्थ: तब (भगवन) मित्र बोले, 'हम भगवान् विष्णु पर केंद्रित हुए| उनकी कृपा से हम स्थिर, पवित्र एवं पतन-रहित हो गए|

समझे क्यों हैं रवि प्रकर्षण बोले नारद सुवचन |
हैं सनातन अनादि अनंत शाश्वत हेतु विश्व सृजन || (४४)

भावार्थ: तब (ब्रह्मऋषि) नारद बोले, 'मैं समझ गया कि सूर्यदेव इतने उत्कर्ष क्यों हैं? वह सनातन, अनादि, अनंत एवं विश्व के सृजन के कारण हैं|'

कर स्थापित जग हैं ज्ञाता भूत वर्तमान प्रगेतन |
करें चारों चरण बाल किशोर युवा वृद्ध पूजन || (४५)

भावार्थ: संसार की स्थापना कर भूत, वर्तमान एवं भविष्य के ज्ञाता हैं| चारों अवस्था- बाल, किशोर, युवा एवं वृद्ध, आपकी स्तुति करते हैं|

हर वर्ष मास दिन प्रति क्षण करें सब आपका पूजन |
पाएं सुख शान्ति जगत और हों पूर्ण समस्त मन्मन् || (४६)

भावार्थ: सभी प्रत्येक वर्ष, माह, दिन एवं क्षण आपकी स्तुति करते हैं| (आपकी स्तुति से) उन्हें जग में सुख शान्ति मिलती है तथा उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं|

हैं रवि ही जनयित्र सभी हैं स्थित सदैव सर्व भूजन |
हैं आप अनंत अति प्रिय त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु जतिन || (४७)

भावार्थ: सब प्राणियों में सदैव स्थित रवि ही सब के माता पिता हैं| आप अनंत हैं तथा त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश, के अति प्रिय हैं|

बोले मित्र है अति कठिन करें रहस्य रवि वर्णन |
है असंभव कर सकें उनका शाश्वत भाव प्रदर्शन || (४८)

भावार्थ: (भगवान) मित्र बोले, '(हे ब्रह्मऋषि नारद) सूर्यदेव के रहस्य का वर्णन करना अत्यंत कठिन है| उनके शाश्वत भाव का प्रदर्शन करना असंभव है|'

फिर भी करूँ प्रयास बता सकूं तुम्हें कुछ लक्षन |
हैं पूर्ण भक्ति हरि रवि ब्रह्मऋषि सुनो सुवचन || (४९)

भावार्थ: फिर भी मैं प्रयास करता हूँ कि आपको उनके कुछ गुण बता सकूं| हे ब्रह्मऋषि सुवचन सुनो, भगवान् सूर्यदेव भक्ति से पूर्ण हैं|

रहित सुख सभी इन्द्रिय हैं वह सूक्ष्म अचिन्त्य पावन |
हैं निष्काम अन्तर्भूत स्थित दैहिक रूप सभी भूजन || (५०)

भावार्थ: वह सभी इन्द्रियों के सुखों से रहित, निष्काम, अंतर्भूत, सूक्ष्म (रूप), अज्ञेय, पवित्र एवं सभी प्राणीओं में दैहिक रूप में विद्यमान हैं|

हैं प्रमत अजर अमर अव्यक्त चित्त और रहित त्रिगुण |
स्वयं रूप अनंत करते वास वह साकेत धाम पावन || (५१)

भावार्थ: वह महाज्ञानी, अजर, अमर, अव्यक्त चित्त वाले और त्रिगुणों (तमस, रजस एवं सत) से रहित हैं| स्वयं प्रभु स्वरुप वह पवित्र साकेत धाम में निवास करते हैं|

काम क्रोध और दंभ नहीं छू सकें कभी उनके तन |
करते वर्णन सभी ग्रंथ उन्हें हिरण्यगर्भ पावन || (५२)

भावार्थ: (कोई दुर्गुण) काम, क्रोध, मद (इत्यादि) उनके स्वरुप को नहीं छू सकते| सभी ग्रन्थ उनका पवित्र हिरण्यगर्भ नाम से वर्णन करते हैं|

करें वर्णित उन्हें महाप्राज्ञ वेद वेदांत सनातन |
अनुसर विधि धर्मवत हैं प्रमुख सभी सुर भूजन || (५३)

भावार्थ: सनातन वेद, वेदांत उन्हें महान बुद्धिमान वर्णित करते हैं| वह धर्म सिद्धांतों का अनुसरण करने वाले सभी सुर एवं प्राणियों के प्रमुख हैं|

करें वर्णन सांख्य सूत्र यद्यपि नाम अनेक पर हैं एकन |
हैं समाहित इनमें सभी सत रजस और तमस त्रिगुन || (५४)

भावार्थ: सांख्य सूत्र में वर्णन है कि यद्यपि इनके अनेक नाम हैं, परन्तु यह एक ही हैं (एकेश्वरवाद)| इन्हीं में सभी तीनों गुण - सत, रजस, और तमस समाहित हैं|

हैं यही दैह्य विश्व एकेश्वर अविनश्वर भगवन |
हो प्रतीत स्थित त्रिलोक पर यथार्थ में एकांगन || (५५)

भावार्थ: यही एकेश्वर अविनाशी प्रभु विश्व की आत्मा हैं| यद्यपि प्रतीत होता है कि वह त्रिलोक (भू, स्वर्ग, नर्क) में स्थित हैं, परन्तु वास्तव में इनका आसन एक स्थान पर ही है (साकेत धाम में ही है)|

हैं विद्यमान रूप सूक्ष्म त्रिलोक सदैव रवि भगवन |
हों न दूषित उनके कर्म यद्यपि करें वास वह सब जन || (५६)

भावार्थ: रवि प्रभु सूक्ष्म रूप में सदैव तीनों लोकों में निवास करते हैं| यद्यपि वह सभी के शरीर में निवास करते हैं, परन्तु उनके कर्म कभी दूषित नहीं होते (उनके कर्म प्राणीओं के कर्म से प्रभावित नहीं होते)|

करते निवास वह हृदय सभी सुर असुर और भूजन |
साक्षी वह सबके कर्म समझ न सकें यह अज्ञानी जन || (५७)

भावार्थ: सुर, असुर और प्राणी, वह सभी के हृदय में निवास करते हैं| सभी के कर्मों के साक्षी हैं| (दुर्भाग्यवश) अज्ञानी लोग यह नहीं समझ पाते |

हैं ज्ञाता ज्ञान ब्रह्म कहें उन्हें हम सगुन या निर्गुन |
हैं परम प्रमत होते प्रगट स्व-इच्छा श्री भगवन || (५८)

भावार्थ: उन्हें हम सगुण (रूप) कहें अथवा निर्गुण (रूप), वह ब्रह्म ज्ञान के ज्ञाता हैं| वह परम बुद्धिमान और स्वेच्छा से प्रगट होते हैं|

हैं अद्भुत उनके कर पग मुख उदर शीर्ष और नयन |
कर्ण उनके हर दिशा सदैव रहैं समीप वह हर जन || (५९)

भावार्थ: उनके हाथ, नेत्र, पैर, मुख, उदर और शीर्ष, सभी अद्भुत हैं| उनके कर्ण प्रत्येक स्थान पर हैं (अतः हर घटना वह जानते हैं)| वह हर प्राणी के समीप रहते हैं (अतः अंतर्मन में स्थित हैं)|

है सरिर उनका शीर्ष और विश्व उनके कर पग नयन |
है स्थित नासिका भू करते वह त्रिलोक संचालन || (६०)

भावार्थ: ब्रह्माण्ड उनका शीर्ष है| विश्व उनके हाथ, पैर और नेत्र हैं| उनकी नासिका धरा पर स्थित है| (इस प्रकार) वह त्रिलोक का संचालन करते हैं|

यह सच्चिदानंद हरि करते रहते सदा जग का भ्रमन |
दिए नाम ग्रंथ इन्हें क्षेत्र हैं यह परम यौगिक भगवन || (६१)

भावार्थ: यह सच्चिदानंद प्रभु सदैव विश्व भ्रमण करते रहते हैं| उन्हें ग्रन्थ क्षेत्र नाम से सम्बोधित करते हैं| वह परम यौगिक ईश्वर हैं|

सर्व ज्ञानी भगवन रखते संज्ञान सब कर्म भूजन |
है वर्णित वेद श्रुति हैं यही अक्षर अव्यक्त अजन || (६२)

भावार्थ: यह सर्व ज्ञाता भगवन सभी प्राणीओं के कर्मों का संज्ञान रखते हैं| वेद और श्रुति में यह वर्णित है कि यही अक्षर, अव्यक्त, अजन्मा हैं|

विश्व पुकारे नाम विस्वा हैं ज्ञानी विविध प्रकरन |
हैं वह सर्व प्रकार पूर्ण रहते व्याप्त त्रिभुवन || (६३)

भावार्थ: संसार उनको विस्वा नाम से (भी) सम्बोधित करता है| वह विविध विषयों के ज्ञानी हैं| सर्व प्रकार से पूर्ण वह त्रिलोक में व्याप्त हैं|

दिए नाम ग्रंथ विश्वरूप हैं वह अनेक रूप भगवन |
रहें मग्न सदा चिंतन विष्णु करें वह विश्व का पालन || (६४)

भावार्थ: उन्हें ग्रन्थ विश्वरूप (भी) कहते हैं| भगवान् के अनेक रूप हैं| वह सदैव विष्णु के चिंतन में मग्न रहते हैं और विश्व का पोषण करते हैं|

हैं वह संपन्न सद्गुण दिए ग्रन्थ सत्त्व नाम भगवन |
अजन्मा नित्य पुरुषोत्तम करें यह विश्व का सृजन || (६५)

भावार्थ: संपन्न सद्गुणों से लिप्त भगवान् को ग्रंथों ने सत्त्व नाम दिया है| यह अजन्मा, पवित्र पुरुषोत्तम विश्व का सृजन करते हैं|

कर विभिद् कोटि स्व पावन दैह्य करें विश्व सृजन |
हो प्रविष्ट आत्मा नए तन लिए संग कर्म अतिपन्न || (६६)

भावार्थ: अपनी पवित्र आत्मा को करोड़ों रूप में विभाजित कर वह विश्व का सृजन करते हैं| तब आत्मा अपने पूर्व कर्म लिए नए तन में प्रवेश करती है|

सम शुद्ध वर्षा जल होए काच मिले जब कर्द भुवन |
बदले स्वाद शुद्ध जल समान होता विकार नए तन || (६७)

भावार्थ: जैसे शुद्ध वर्षा का जल जब कीचड़ से युक्त धरती पर पड़ता है तो वह क्षारीय हो जाता है, उसका स्वाद बदल जाता है| उसी प्रकार (दूषित मनोभाव वाले) तन में जब आत्मा प्रविष्ट होती है तो उसका भी मनोभाव बदल जाता है| (यहां ब्रह्मदेव संभवतः यह चर्चा कर रहे हैं कि पुनर्जन्म में आत्मा अपने कर्मों के साथ तन में प्रवेश करती है, जिसका परिणाम नियति के रूप में आता है| यद्यपि प्रभु ने पवित्र आत्मा ही सृजित की थी, लेकिन कर्म प्रभाव से वह तन से मिलकर दूषित हो जाती है|)

यद्यपि वायु एक तत्व पर करती जब प्रवेश क्लोमन् |
व्यान समान अपान उदान प्राण हो पञ्च विध पवन || (६८)

भावार्थ: यद्यपि वायु एक तत्व है लेकिन जब फेफड़ों में प्रवेश करती है, तो वायु पांच प्रकार की हो जाती है, व्यान समान अपान उदान प्राण|

दे जीवन दान करती रक्षा पवन इस भांति सभी जन |
समान यद्यपि हैं एक पर धारें रूप अनेक भगवन || (६९)

भावार्थ: वायु इस प्रकार प्राणियों को जीवन दान देकर उनकी रक्षा करती है| उसी प्रकार यद्यपि भगवान् एक हैं, परन्तु विभिन्न रूप धारण करते हैं|

हैं सूर्य त्रिरूप अग्नि प्रथम हो जो उदर उत्पन्न |
द्वितीय जनित दाह दारु तृतीय उत्पन्न दिव्य गगन || (७०)

भावार्थ: सूर्यदेव ही तीन प्रकार की अग्नि हैं| प्रथम जो उदर में उत्पन्न होती है, दूसरी जो काष्ठ के जलने से होती है और तीसरी जो दिव्य आकाशीय है|

हो उदर से उत्पन्न जठराग्नि जो करे पाचन भोजन |
दहन काष्ठ पकाए भोजन हो प्रगट दिव्य अग्नि गगन || (७१)

भावार्थ: उदर से जठराग्नि उत्पन्न होती है जो भोजन पचाती है| काष्ठ अग्नि भोजन पकाती है और दिव्य अग्नि आकाश से प्रगट होती है|

जैसे संभव दीप एक से हों सहस्त्रों दीप उज्जवलन |
उसी प्रकार करें भगवन कोटि कोटि आकार सृजन || (७२)

भावार्थ: जिस प्रकार एक दीप से सहस्त्रों दीप प्रज्वलित किये जा सकते हैं, उसी प्रकार भगवान् (एक आत्मा से) कोटि कोटि आकारों (आत्माओं) का सृजन कर देते हैं|

हो जीव चल या अचल है नहीं अविनाशी इस भुवन |
हैं केवल भगवान् अव्यय असीमित अचिन्त्य पावन || (७३)

भावार्थ: कोई भी जीव, चल अथवा अचल, पृथ्वी पर अविनाशी नहीं है| केवल भगवान् ही अक्षय, असीमित, अज्ञेय एवं नित्य हैं|

हैं वह स्थित सर्वभूत समझो उन्हें सर्वोच्च चेतन |
यह वाणी वर्णित दिव्य संत कहें हरि मित्र वचन || (७४)

भावार्थ: सर्व प्राणियों में स्थित यही परमात्मा सर्वोच्च हैं| भगवान् मित्र यह वचन कहते हैं कि दिव्य संत यही वाणी वर्णित करते हैं|

हैं हरि अव्यक्त रहित त्रिगुण हो विश्व उन्हीं से उत्पन्न |
हैं वह आदि निसर्ग यद्यपि रहते अदृश्य श्री भगवन || (७५)

भावार्थ: अव्यक्त त्रिगुणों से रहित प्रभु ही विश्व का सृजन करते हैं| यद्यपि श्री भगवान् अदृश्य हैं (उन्हें देखा नहीं जा सकता), परन्तु वह आदि प्रकृति हैं|

है यह सत्य ब्राह्मणजन हैं रवि ही अव्यक्त भगवन |
हैं वही सत्त वही असत्त वह पूजित सब सुर भूजन || (७६)

भावार्थ: (ब्रह्मदेव बोले) हे ब्राह्मणो, यह सत्य है कि सूर्य देव ही अव्यक्त हरि हैं| वही वास्तविक हैं और वही अवास्तविक| सभी सुर एवं भू प्राणी उन्हीं का पूजन करते हैं|

कहें ब्रह्मदेव यह सत्य नहीं कोई सम उन त्रिभुवन |
हैं वह एक मात्र जनयित्र सभी और विश्व वृषन् || (७७)

भावार्थ: ब्रह्मदेव कहते हैं, 'यह सत्य है कि उनके सदृश्य तीनों लोकों में कोई नहीं है| वही एकमात्र सब के जनक हैं| वही समस्त संसार के स्वामी हैं|'

करो स्वीकार हरि रूप इन्हें करूँ मैं भी नमन |
हैं समाहित यह सभी जन करो तुम इनका पूजन || (७८)

भावार्थ: इन्हें प्रभु के रूप में स्वीकार करो| मैं भी नमन करता हूँ| यह सभी प्राणियों में समाहित हैं| इनका पूजन करो|

करें जब देव इनका पूजन पा जाएं वह लक्ष्य जीवन |
यद्यपि हैं स्थित अनेक रूप पर करें हर रूप में नमन || (७९)

भावार्थ: जब देव इनका पूजन करते हैं तब उन्हें जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होती है| यद्यपि वह अनेक रूपों में स्थित हैं, परन्तु हर रूप में इन्हें नमन करते हैं|

करो सदैव हृदय धारण पावन सूर्य आदि भगवन |
उनकी कृपा से पा जाओगे निःसंदेह ध्येय जीवन || (८०)

भावार्थ: पवित्र देव सूर्य को सदैव अपने हृदय में धारण करो| उनकी कृपा से निःसंदेह जीवन का ध्येय पा जाओगे|

समस्त सुर असुर जन करें इस हेतु सूर्य का पूजन |
सुनो ब्रह्मऋषि नारद है यह भेद अवित्त उपच्छन्न || (८१)

भावार्थ: इसलिए सूर्यदेव का सभी सुर, असुर और प्राणी पूजन करते हैं| ब्रह्मऋषि नारद सुनो, यह एक अज्ञात गुह्य भेद है|

सब विश्व आत्मसातित जन करें सूर्यदेव पूजन |
रखो अति श्रद्धा स्व-मन होंगे फलित सभी मन्मन् || (८२)

भावार्थ: सभी विश्व में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए प्राणी सूर्यदेव का पूजन करते हैं| तुम भी अपने हृदय में श्रद्धा रखो| तुम्हारी सभी मनोकामनाएं फलीभूत होंगी|

सुनो हे नारद सर्वोच्च देव श्री ब्रह्मा के वचन |
करो पूर्ण समर्पण सूर्य हैं जो सर्व श्रेष्ठ भगवन || (८३)

भावार्थ: हे (ब्रह्मऋषि) नारद सर्वोच्च देव ब्रह्मा के वचन सुनो| सूर्यदेव को पूर्ण समर्पण करो क्योंकि यही सर्वश्रेष्ठ देव हैं|

करें प्रवेश सहस्त्रों सूर्य किरण तन ऐसे सर्जन |
पाए मुक्ति रोग हो स्वस्थ्य भोगे ऐश्वर्य इस भुवन || (८४)

भावार्थ: ऐसे समर्पण कर्ता के शरीर में सहस्त्रों सूर्य किरणें प्रवेश करती हैं (अतः उसका अज्ञान दूर हो जाता है)| वह रोगों से मुक्ति पाकर स्वस्थ्य होता है तथा इस पृथ्वी पर ऐश्वर्य भोगता है|

पा धन धान्य सम्मान हो तुल्य कांति उसका जीवन |
हो विकसित बुद्धि बने प्राज्ञ सम देवगुरु महन || (८५)

भावार्थ: धन-धान्य, सम्मान प्राप्त कर उसका जीवन स्वर्ण समान हो जाता है (अर्थात सब प्रकार से उसे सुख शान्ति की प्राप्ति होती है)| बुद्धि का विकास होता है जिससे वह देवगुरु (वृहस्पति के समान) बुद्धिमान बन जाता है|

करे जो जन सूर्यदेव महात्मय पठन श्रवन मनन |
पा सके वह इहलोक सर्व सुख आनंद और अमन || (८६)

भावार्थ: जो प्राणी सूर्यदेव के महात्मय का पठन, श्रवण एवं चिंतन करता है, उसे इहलोक में सुख, शान्ति और आनंद की प्राप्ति होती है|

पाए मोक्ष करे निवास सूर्यलोक पश्चात मरन |
कहें ब्रह्मा अतैव करो परम देव रवि का पूजन || (८७)

भावार्थ: मरण होने पर मोक्ष पाकर उसे सूर्यलोक में स्थान मिलता है (सूर्यदेव उसकी आत्मा को मोक्ष प्रदान कर देते हैं)| ब्रह्मदेव कहते हैं कि इसलिए श्रेष्ठ देव सूर्य का पूजन करो|

इति श्री सूर्य देव माहात्मय

सूर्यदेव की आरती

जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
त्रिभुवन तिमिर निकन्दन,भक्त हृदय चन्दन ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

सप्त अश्वरथ राजित एक चक्रधारी ।
दु:खहारी सुखकारी मानस मल हारी ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

सुर मुनि भूसुर वन्दित विमल विभवशाली ।
अघ-दल-दलन दिवाकर,दिव्य किरण माली ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

सकल सुकर्म प्रसविता सविता शुभकारी ।
विश्व विलोचन मोचन भव-बन्धन भारी ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

कमल समूह विकासक नाशक त्रय तापा ।
सेवत साहज हरत अति मनसिज संतापा ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

नेत्र व्याधि हर सुरवर भू पीड़ा हारी ।
वृष्टि विमोचन संतत परहित व्रतधारी ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

सूर्यदेव करुणाकर अब करुणा कीजै ।
हर अज्ञान मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै ॥
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- <u>ब्रह्म मनोभाव</u>: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के संरक्षक हैं।
- <u>आत्मा मनोभाव</u>: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- <u>माया मनोभाव</u>: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

कवि - डॉ यतेंद्र शर्मा

डॉ यतेंद्र शर्मा - सन १९५३ में एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री राम कथा संस्थान

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ई-मेल: srkperth@outlook.com
टेलीफोन: +६१ (०८) ९४०१ १५४३